MARCH 2023, INDORE

PUNJAB SPECIAL EDITION

COT COSMOS

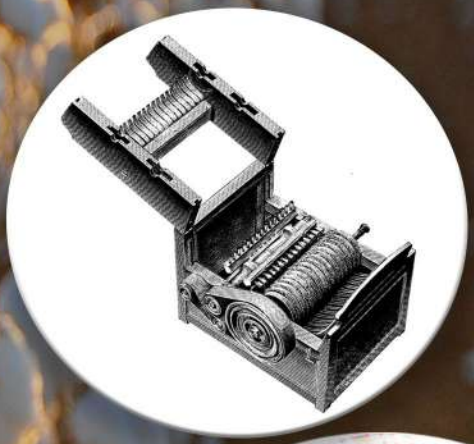

AN INNITIATIVE BY SMART INFO GROUP

INDEX

EDITORIAL ---------- 1

PUNJAB SPECIAL COVERAGE ----- 2-7

ADVERTISEMENT ---------- 8-9

INTERVIEW ---------- 10-11

ARRIVAL REPORT ---------- 12

EVENTS ---------- 13

BLOG ---------- 14-15

NEWS HIGHLIGHTS ---------- 16

TEAM ---------- 17

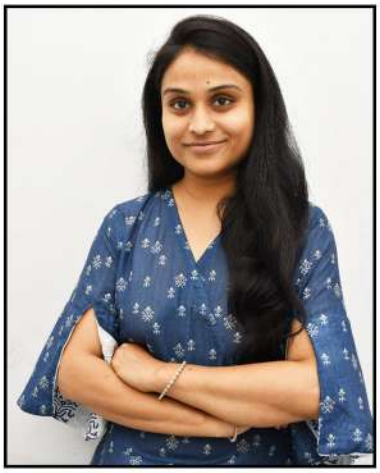

-रक्षा भगत जैन

पंजाब में फीकी पड़ रही सफेद सोने की चमक

भारत के प्रमुख कृषि प्रधान राज्यों की सूचि में पंजाब का नाम तीसरे स्थान पर आता है। चावल, गन्ना, गेंहू और कपास यहां की प्रमुख फसलों में शामिल है। किंतु पिछले कुछ सालों से पंजाब में कपास अपने असतित्व की लड़ाई लड़ रहा है। साल-दर-साल रकबा बढ़ने के बावजूद यहां कपास की पैदावार लगातार गिरती जा रही है। जिसका नुकसान किसान, व्यापारी और यहां तक की सरकार को भी उठाना पड़ रहा है।

गुलाबी सुंडी और सफेद मक्खी जैसे रोगों का प्रकोप, नहर से सही समय पर पानी उपलब्ध ना हो पाना, बीज और पेस्टिसाइड में मिलावट, जैसे तमाम कारण है जिसकी वजह से पंजाब की उपजाऊ जमीन पर कपास सिमटता जा रहा है। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी का कहना है कि इस साल कपास का उत्पादन 45 प्रतिशत कम हुआ है जबकि पंजाब के व्यापारियों की माने तो उत्पादन 70 फीसदी तक गिरा है।

पंजाब कृषि विभाग से मिले आंकड़े बताते है कि इस साल पंजाब में कच्चे कपास की औसत उत्पादकता 441 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रही है। साल 2020-21 में यह 690 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी। दो साल में प्रति हेक्टेयर 249 किलोग्राम तक उत्पादन का कम हो जाना अलार्मिंग स्थिति को दर्शाता है।

राज्य में लगभग 25 कपास स्टेशन और 100 के करीब जिनिंग फैक्ट्री मौजूद है। कपास उत्पादन कम होने की वजह से यहां के कुछ जिनर्स करीबी राज्य राजस्थान की ओर रूख करने लगे है तो कुछ जिनर्स ने सरकार से राइस यूनिट शुरू करने की अनुमति मांगी है। किसान भी कपास की उपज से असंतुष्ट है और धान की खेती करने का मन बना रहे है। अब भी यदि सरकार ने कपास की ओर ध्यान नहीं दिया और इसकी पैदावार बढ़ाने के उचित कदम नहीं उठाए तो संभावना है कि पंजाब से कपास कारोबार पूरी तरह खत्म हो जाएं।

Special Coverage

Punjab Cotton Industry

कपास सीजन 2022-23 पंजाब के लिए बेहद निराशाजनक

राघव शारदा

(एमडी बालचंद कॉटस्पिन प्राइवेट लिमिटेड/मैसर्स घेरू लाल बालचंद)

अबोहर, पंजाब

यह साल कॉटन के लिए बहुत बुरा रहा है। पंजाब में तो हालात बद से बदतर हो चुके हैं। पहले फसल कमजोर हुई और बाद में मार्केट में डिमांड ना के बराबर रही। सरकार की ओर से भी कपास पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा। नतीजा, किसानों और व्यापारियों का कपास पर से भरोसा ही उठता जा रहा है। नए सीजन में बहुत से किसान कपास को छोड़ पैडी पर शिफट होने का मन बना रहे है।

पैदावार बहुत कमजोर

कारोबार का वर्तमान परिदृश्य ऐसा है कि पूरे देश में कपास की धीमी आवक का जिम्मेदार किसान को ठहराया जा रहा है। सब यही कह रहे है कि किसानों ने कपास रोक कर रखा है। दूसरे राज्यों के लिए यह बात सही साबित हो सकती है लेकिन पंजाब में ऐसा नहीं है। पंजाब में कपास की पैदावार ही बहुत कमजोर हुई है। सामान्य तौर पर जहां 1 एकड़ जमीन में 10 से 12 क्विंटल कपास होता था वहां इस बार महज 2-3 क्विंटल की ही उपज हुई है। हालात इतने बुरे है कि जिस किसान ने 20 एकड़ जमीन में कपास लगाया था उसके पास इतनी पैदावार भी नहीं है कि वह 1 ट्रॉली पूरी भर सकें।

कोई भी फायदे में नहीं

जिनर्स की स्थिति भी बहुत बुरी है। केवल 10 प्रतिशत जिनिंग ही इस वक्त चालू स्थिति में है। किसान हो या जिनर, स्पिनर हो या टेडर या फिर एक्सपोर्टर इस सीजन में कपास कारोबार में कोई भी फायदे में नहीं है। अगले सीजन से सभी को उम्मीद है। लेकिन उम्मीद पूरी तभी होगी जब पैदावार बढ़ाई जाएं। पंजाब में कई जगह फसल नहर के पानी पर निर्भर है। किसानों को सही समय पर नहर का पानी, अच्छी क्वालिटी के बीज और पेस्टिसाइड उपलब्ध कराए जाने चाहिए। ताकि फसल अच्छी हो और पूरे व्यापार जगत को इसका लाभ हो।

पंजाब में दिसंबर से बंद है 80 से ज्यादा प्रतिशत जिनिंग फैक्ट्री

अश्विनी कुमार
(कैलाश कॉटन फैक्ट्री)
भटिंडा, पंजाब.

कपास कारोबार इस साल पूरी तरह फेल साबित हुआ है। खासकर, पंजाब में तो इस उद्योग से जुड़े लगभग सभी व्यापारी और किसान से नुकसान ही उठाया है। सीजन 2022-23 में पंजाब में कपास की फसल को खासा नुकसान हुआ है। नतीजा, जिस अवधि में यहां की जिनिंग फैक्ट्री पूरी क्षमता के साथ काम किया करती थी उसी समान अवधि में पंजाब की 80 प्रतिशत से ज्यादा जिनिंग बंद हो चुकी है या बंद जैसी स्थिति में चल रही है। पंजाब के मौजूदा हालात बताती यह बात कही भटिंडा के जाने-माने जिनर अश्विनी कुमार ने।

कॉटन इंडस्टी छोड़ने का मन बना रहे जिनर्स

उन्होंने कहा कि हमारा परिवार 1975 से इस कारोबार से जुड़ा है। वर्तमान में हमारी 2 जिनिंग यूनिट है और दोनों ही पूरी तरह बंद है। डिस्पेरिटी में हमने दिसंबर माह तक तो फैक्ट्री चलाई लेकिन उसके बाद उसे बंद करना ही ठीक समझा। हमारी ही तरह पंजाब के कई जिनर्स ने यही फैसला लिया है। हमारा ऑयल मिल का भी काम है इसलिए हम फैक्ट्री बंद करने के बावजूद भी उतनी बुरी स्थिति में नहीं है। और अभी 1 साल और इंतजार करने की सोच रखते हैं। लेकिन, ज्यादातर जिनर्स कॉटन इंडस्टी को छोड़ने का मन बना रहे है।

मिल्स कर रही है ऑर्डर रिजेक्ट

पिछले साल भी कॉटन क्रॉप कम थी बावजूद इसके जिनर्स के पास काम था लेकिन इस बार तो रूई ही नहीं है। जो थोड़ा बहुत माल है उसकी क्वालिटी भी बहुत कमजोर है। पंजाब में साढ़े 27 से 28 एमएम का कॉटन पाया जाता था लेकिन इस बार इसकी क्वालिटी घटकर महज 26 एमएम के लगभग रह गई है। ऐसे में जिनर्स को कई ऐसी परिस्थिति का भी सामना करना पड़ रहा है जब माल बेचने के बाद भी मिल्स क्वालिटी अच्छी नहीं होने की वजह से ऑर्डर ही रिजेक्ट कर रही है।

पंजाब से माइग्रेट होकर राजस्थान का रूख कर रही जिनिंग इंडस्ट्री

मनीष अग्रवाल

(अग्रवाल कॉटन एंड जनरल मिल)

बरनाला, पंजाब

कपास कारोबार के हालात पंजाब में बहुत गंभीर है। स्थिति इस हद तक बिगड़ने लगी है कि पंजाब क जिनर्स अब पड़ोसी राज्य राजस्थान में शिफ्ट होने लगे है। पिछले 2 सालों में प्रदेश के 10 से 15 प्रतिशत जिनर्स ने राजस्थान का रूख किया है। कपास कारोबार से जिनर्स का भरोसा उठने लगा है, नतीजा कुछ जिनर्स ने सरकार से राइस चैनल में शिफ्ट होने की अनुमति भी मांगी है।

पंजाब में हर साल पैदावार में कमी आ रही है। पिछले साल पिंक बॉलवर्म ने हमला किया था तो इस साल अतिरिक्त बारिश और सफेद मक्खी ने फसल को बर्बाद किया। सवाल यह उठता है कि इन रोगों का हमला पंजाब की फसल पर ही क्यों होता है? राजस्थान हमारा पड़ोसी राज्य है वहां तो ऐसी कोई समस्या नहीं होती। और इसका सीधा सा जवाब यह है कि पंजाब में जो सीड और पेस्टिसाइड उपलब्ध कराए जा रहे है उनमें मिलावट बहुत ज्यादा है। इस डुप्लीकेसी पर सरकार ने यदि अब भी कोई ठोस कदम नहीं उठाया तो हालात बद से बदतर हो जाएंगें।

कपास पंजाब की मुख्य फसलों में से एक है लेकिन, यहां की सरकार का कपास पर बिल्कुल ध्यान नहीं है। बुवाई के समय जिन क्षेत्रों में ट्यूबवेल नहीं है वहां कैनल का पानी सही समय पर नहीं पहुंच पाया। किसानों को अपनी फसल को रोगों से बचाने के बारे में ना तो ठीक से जागरूक किया गया ना ही असरदार पेस्टिसाइड उपलब्ध कराए गए। इंडस्टी बंद होने के बावजूद भी बिजली का चार्ज पूरा वसूला जा रहा है। ऐसे में जिनर्स के पास दूसरे राज्य में जाकर व्यापार करने के बजाय कोई रास्ता ही कहां है।

5 साल पहले पंजाब में 440 जिनिंग फैक्ट्री हुआ करती थी और लगभग सभी चालू अवस्था में थी। कोरोना के बाद 2 साल पहले महज 75 जिनिंग ही यहां चालू अवस्था में कार्यरत थी और वर्तमान में इनमें से भी औसतन 20-25 जिनिंग ही चालू अवस्था में है और वो भी बेहद कम क्षमता पर। पापा मंडी में मौजूद मेरी जिनिंग फैक्ट्री ही केवल 20 प्रतिशत क्षमता के साथ काम कर रही है।

पंजाब के किसान और जिनर्स दोनों का ही भरोसा कपास पर से उठता जा रहा है। चूंकि सरकार का भी पूरा फोकस धान की फसल पर है इसलिए किसान और व्यापारी भी कपास को छोड, धान की ओर रूख करते जा रहे हैं। यदि अब भी सरकार ने कपास पर ध्यान नहीं दिया तो पंजाब भी उन राज्यों की सूचि में शामिल हो जाएगा जहां से कपास उद्योग का नाम-ओ-निशान तक मिट चुका है।

स्थिति नहीं सुधरी तो पंजाब में खत्म हो जाएगा कपास कारोबार

मोनू थापा
(कॉटन ब्रोकर)
पापा मंडी, पंजाब

पंजाब में कपास की फसल में साल-दर-साल तेजी से कमी आ रही है। 5 साल पहले भटिंडा में 40 हजार गांठ हुआ करती थी, जो इस साल सिमटकर महज 10 हजार गांठ ही रह गई है। अगर कमी का सिलसिला इसी गति से बरकरार रहा तो आने वाले 5 साल में यहां कपास कारोबार पूरी तरह खत्म हो जाएगा। कारोबार के प्रति चिंता व्यक्त करते यह विचार है पंजाब के बरनाला क्षेत्र के ब्रोकर मोनू थापा के।

SIS से बातचीत में उन्होंने कहा कि जिनिंग फैक्ट्री मालिक यदि 1 दिन में 1000 गांठे निकाले या फिर 1 दिन में 100 गांठे निकालें। उसका खर्च समान ही होता है। इस वक्त कोई भी फैक्ट्री पूरी क्षमता के साथ काम नहीं कर पा रही है। इसलिए जो चंद फैक्ट्री चल भी रही है वह भी डिस्पेरिटी में ही काम करने को मजबूर है।

पंजाब में कपास कारोबार के हालात बद से बदतर होते जा रहे है। इसकी मुख्य वजह है यहां की फसल में तेजी से हो रही गिरावट। पिछले साल भी फसल कमजोर थी बावजूद इसके किसानों को अच्छे भाव मिल गए थे। नतीजा, उन्होंने कपास पर से विश्वास नहीं खोया था और अच्छे रकबे में कपास की बुआई की थी। लेकिन, इस साल स्थिति ऐसी है कि ना तो फसल अच्छी हुई है और ना ही भाव अच्छे मिले है। इससे किसानों की रूचि कपास पर से हटती जा रही है। हालांकि अभी भी बचे हुए 1 महीने से उम्मीद है। यदि इस माह में अच्छे भाव मिल गए तो उम्मीद है किसानों का कपास पर भरोसा लौट आएं। अन्यथा आने वाले सीजन में कपास की बुआई ही बहुत कम रह जाएगी।

STATE-WISE/YEAR-WISE AREA, PRODUCTION AND YIELD IN INDIA

(AREA IN LAKH HECT., PROD IN LAKH BALES 170 KGS, YIELD KGS PER HECT.)

Year	2012-13			2013-14			2014-15			2015-16			2016-17		
STATE	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield
PANJAB	4.8	21	744	4.46	21	800	4.2	13	526	3.39	6.25	313	2.85	9	537
HARYANA	6.14	26	720	5.36	24	761	6.48	23	603	6.15	14.5	401	5.7	20.5	611
RAJASTHAN	4.5	17	642	3.93	14	606	4.87	17	593	4.48	15	569	4.71	16.5	596
NORTH TOTAL	**15.44**	**64**	**705**	**13.75**	**59**	**729**	**15.55**	**53**	**579**	**14.02**	**35.75**	**433**	**13.26**	**46**	**590**
GUJRAT	24.97	93	633	25.19	124	837	27.73	112	687	27.22	90	562	23.82	95	678
MAHARASTRA	41.46	81	332	41.92	84	341	41.9	80	325	42.07	76	307	38	88.5	396
MADHYA PRADESH	6.08	19	531	5.14	19	628	5.74	19	563	5.63	18	544	5.99	20.5	582
CENTRAL TOTAL	**72.51**	**193**	**452**	**72.25**	**227**	**534**	**75.37**	**211**	**476**	**74.92**	**184**	**1413**	**67.81**	**204**	**511**
TELANGANA	24	84	595	23.89	78	555	17.13	50.5	501	17.73	58	556	14.09	48	579
ANDHRA PRADHESH							8.21	26.5	549	6.66	23.75	606	4.72	19	684
KARNATAKA	4.85	17	596	6.62	23	591	8.75	34	661	6.42	19.5	516	5.1	18	600
TAMIL NADU	1.28	6	797	1.52	5	559	1.87	6	545	1.42	6	718	1.42	5	599
SOUTH TOTAL	**30.13**	**107**	**604**	**32.03**	**106**	**563**	**35.96**	**117**	**553**	**32.23**	**107.25**	**566**	**25.33**	**90**	**604**
ORISSA	1.19	4	571	1.24	4	548	1.27	3	402	1.25	3	408	1.36	3	375
OTHERS	0.51	2	667	0.33	2	1030	0.31	2	1097	0.5	2	680	0.5	2	680
GR TOTAL	**119.78**	**370**	**525**	**118.6**	**398**	**568**	**125.46**	**386**	**811**	**122.92**	**332**	**459**	**108.26**	**345**	**542**

SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775

YEAR	2017-18			2018-19			2019-20			2020-21(P)*			2021-22(P)*		
STATE	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield	Area	Prod	Yield
PANJAB	2.91	11.76	687	2.68	8.5	539	2.48	9.5	651	2.52	10.23	690	2.56	6.51	432
HARYANA	6.65	21.48	549	7.08	23	552	7.23	26.5	623	7.4	18.23	419	6.36	13.16	352
RAJASTHAN	5.84	23.26	677	6.29	27.5	743	7.6	29	649	8.07	32.07	676	7.56	24.81	558
NORTH TOTAL	**15.4**	**56.5**	**624**	**16.05**	**59**	**625**	**17.31**	**65**	**638**	**17.99**	**60.53**	**572**	**16.48**	**44.48**	**459**
GUJRAT	26.24	103.84	673	26.6	90	575	26.55	89	570	22.7	72.18	541	22.46	75.57	572
MAHARASTRA	43.51	83.35	326	42.18	76	306	44.91	87	329	45.44	101.05	378	39.54	71.18	306
MADHYA PRADESH	6.03	22.14	624	6.14	23	637	6.5	20	523	5.88	13.38	387	5.63	14.27	431
CENTRAL TOTAL	**75.78**	**209.33**	**470**	**74.92**	**189**	**429**	**77.96**	**196**	**427**	**74.02**	**186.61**	**429**	**67.63**	**161.02**	**405**
TELANGANA	18.97	54.44	488	18.39	42	388	21.27	54	432	23.58	57.97	418	20.69	66.45	546
ANDHRA PRADHESH	6.46	21.26	559	6.2	15	411	6.57	18	466	6.06	16	449	5.48	15.18	471
KARNATAKA	5.47	17.32	538	7.18	16	379	8.17	20	416	8.2	23.2	481	6.77	19.52	490
TAMIL NADU	1.83	5.5	511	1.33	6	767	1.7	6	600	1.12	2.43	369	1.38	2.8	345
SOUTH TOTAL	**32.73**	**98.52**	**512**	**33.1**	**79**	**406**	**37.71**	**98**	**442**	**38.96**	**99.6**	**435**	**34.32**	**103.95**	**515**
ORISSA	1.45	3.65	428	1.57	4	433	1.7	4	400	1.71	5.51	548	1.93	5.7	502
OTHERS	0.5	2	680	0.5	2	480	0.09	2	3778	0.17	0.23	230	0.19	0.28	251
GR TOTAL	**125.86**	**370**	**500**	**125.14**	**333**	**449**	**134.77**	**365**	**460**	**132.85**	**352.48**	**451**	**120.55**	**315.43**	**445**

Note : Production is inclusive of state-wise loose

1) from 2010-11 to 2018-19: 26.10 lakh bales as per survey undertaken by ATIRA

2) from 2019-20 onward : 5.45 lakh bales as per survey undertaken by SVPISTM

Source : Meeting of Committee on Cotton Production and Consumption (COCPC) held on 23-05-2022

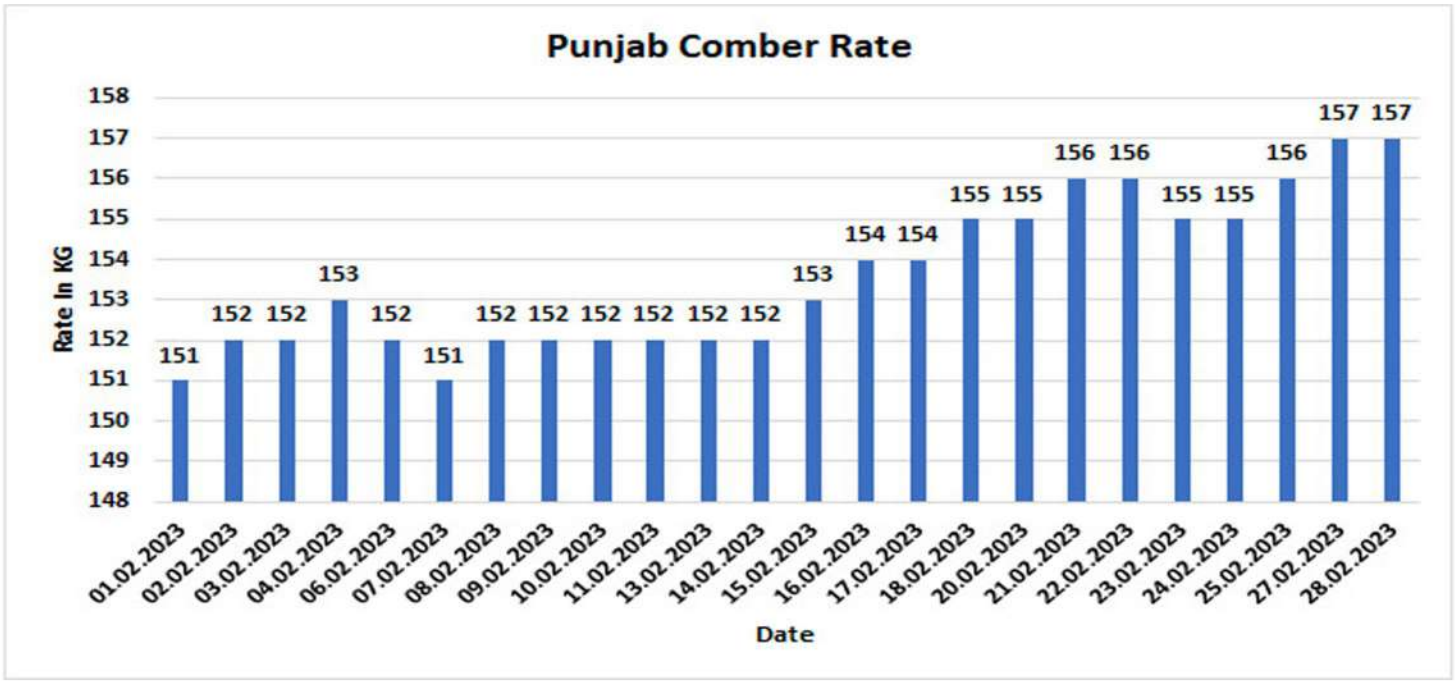

पंजाब में फरवरी माह में कॉम्बर के भाव में बढ़ोतरी का रूख रहा। माह की शुरूआत **151** रूपए प्रति किलो के भाव के साथ हुई जो माह अंत में बढ़कर **157** रूपए प्रति किलो के स्तर पर पहुंच गई। पूरे माह में सबसे ज्यादा भाव भी **27** और **28** फरवरी **2023** को **157** रूपए रहे। जबकि सबसे कम भाव **1** और **7** फरवरी को **151** रूपए रहे।

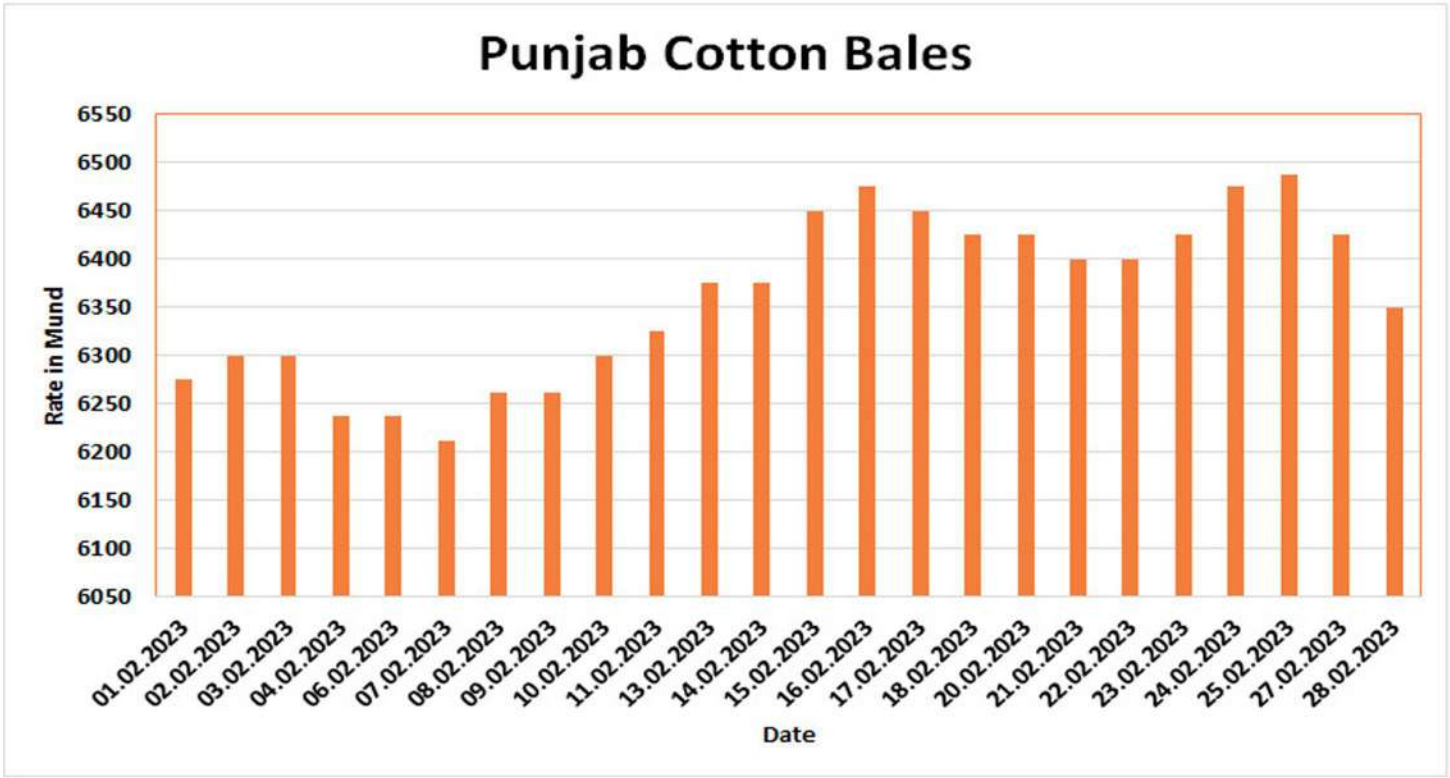

आवक में थोड़ा सुधार होने के चलते पिछले महीने कॉटन के भाव में खासा उतार-चढ़ाव देखने को मिला। माह की शुरूआत में भाव **6275** रूपए प्रति मंड के लगभग थे जबकि माह अंत में भाव बढ़कर **6350** रूपए प्रति मंड के स्तर पर पहुंच गए। पंजाब में फरवरी माह में कॉटन के सबसे तेज भाव **25** फरवरी को **6480** रूपए रहे थे जबकि सबसे कम भाव **7** फरवरी को **6225** रूपए प्रति मंड के आस-पास देखे गए।

ADVERTISEMENT

Sk.Amjat (Managing Director)
+91 88885 85788
+91 9404467088
skskamjat@gmail.com
GST No. 27DCHPS5982M1ZL

The Name Of Trust

Maharashtra INDUSTRIES

Ginning & Pressing Automation Systems

Hot Box,Automatic R.C. Feeding System (Trolley) One by One
Lint Suction System, Super Cleaner,R.C. & Press Belt System,
Seed Screw Conveyor Ginning Pressing All Solution.

Navsari Square, Walgaon Road, Amravati. 444601 (M.S.)

CFTS

Cotton Fiber Testing Services

Delivering Accurate & Reliable Results

"FIRST"

Uster HVI 1000 Cotton Testing Laboratory in
Telangana & Andhra Pradesh

- Convenient location - 5 min walking distance from MGBS Bus Stand, Hyd
- Switzerland technology - Uster HVI 1000
- Testing according to global standards
- 12 hours of conditioning as per ICA Bremen Rules (Germany)
- Reports delivered through email and whatsapp

WANT ACCURATE AND DEPENDABLE RESULTS ?

Pickup services from MGBS Bus Stand, JBS Bus Stand and from private bus points

Cotton Fiber Testing Services (CFTS)
Flat No. 15-4-67, 4th Floor, Saraswati Complex, Old Bus Stand Road, Gowliguda Chaman, Hyderabad - 500012.

Phone Number: 91211 82226, 91210 49801 | Email ID: cfts.hyd@gmail.com

SPINNING MILLS को सर्वाइव करना है तो बढ़ाना होगा कोम्बड यार्न का प्रोडक्शन

यह बात कही लुधियाना के ट्रेडर और एक्सपोर्टर शत्रुघ्न तिवारी ने। वे पिछले 33 सालों से इस इंडस्ट्री में कार्य कर रह है। आइए जानते है इंडस्ट्री के वर्तमान परिदृश्य पर उनके विचार-

इस सीजन कोम्बर और कॉटन के दामों के बीच अंतर बहुत ज्यादा है। कॉटन के दाम तो पिछले कुछ समय में कम हुए है लेकिन कोम्बर के दाम में तेजी बनी हुई है। इसका कारण है इस सीजन में कॉटन की क्वालिटी और क्वांटिटी दोनों का ही कम होना। अतिरिक्त और बेमौसम बारिश की वजह से इस बार कॉटन की क्वालिटी पर बहुत असर हुआ है। क्वालिटी अच्छी नहीं होने के कारण कोम्बर का प्रोडक्शन भी बहुत कम है। नतीजा भाव ज्यादा है और एक्सपोर्ट बंद है। यदि स्पिनिंग मिल्स को सर्वाइव करना है तो उन्हें कोम्बड यार्न का प्रोडक्शन बढ़ाना चाहिए।

शत्रुघ्न तिवारी (owner of shiva overseas)
ट्रेडर, एक्सपोर्टर, लुधियाना, पंजाब

इनदिनों कोम्बर निकलनी कम हो गई है। इस वजह से डेनिम जैसे गारमेंट भी 100 प्रतिशन कॉटन से नहीं बन रहे है। हमें क्वालिटी कॉटन क्रॉप पर फोकस करने की आवश्यकता है।

- चूंकि कपास और कोम्बर दोनों में ही भारतीय और वैश्विक कीमतों में अंतर बहुत ज्यादा है इसलिए एक्सपोर्ट लगभग बंद है। इंडस्ट्री को गति तभी मिलेगी जब चारों स्टेज यानी रॉ कॉटन, कॉटन बेल्स, यार्न और गारमेंट सभी का एक्सपोर्ट बढ़ें।

- कॉटन वेस्ट इंडस्ट्री में लागत कम है और मुनाफा अच्छा है। यही वजह है कि ओपन एंड इंडस्ट्री पिछले एक साल में 1.5 गुना जयादा बढ़ गई है।

- कॉटन वेस्ट इंडस्ट्री ने खासकर कोम्बर इंडस्ट्रीने उस वक्त भी अच्छा व्यापार किया था जब रूई 1 लाख रूपए पर कैंडी हो गई थी। आज रूई 60 हजार पर पहुंच गई है लेकिन यह इंडस्ट्री ठप है क्योंकि कोम्बर प्रोडक्शन कम है।

- मेन मैन फाइबर का इस्तेमाल इंडस्ट्री में तेजी से बढ़ रहा है। कोम्बर का प्रोडक्शन भी कम है। इसलिए ब्रांडेड जिंस भी अब 100 प्रतिशत कॉटन की नहीं रही। उनमें भी दूसरे फाइबर का इस्तेमाल होने लगा है।

- किसानों ने इस बार अच्छी कीमत मिलने के इंतजार में रॉ कॉटन का बहुत अधिक स्टोरेज किया है। इसकी वजह से पूरे उद्योग की गति धीमी हुई है।

- स्पिनिंग मिल्स चाहे वो कार्डेड यार्न बना रही हो या कोम्बड यार्न दोनों ही मजदूरों पर निर्भर है। और फिलहाल नुकसान में काम करने को मजबूर है।

- यूक्रेन और रशिया युद्ध ने कॉटन कारोबार खासकर इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट को बहुत खराब किया है। इसकी वजह से आपूर्ति और मांग दोनों ही बहुत कम हो गई है।

यह होना चाहिए-

- घरेलू कीमतें, वैश्विक कीमतों के बराबर या कम होनी चाहिए और एक्सपोर्ट दोबारा पूरी गति से शुरू होना चाहिए।

- कपास की फसल की गुणवत्ता सुधारने की ओर तेजी से ध्यान देने की आवश्यकता है।

- सभी प्रमुख श्रेणी यानी रॉ कॉटन, कॉटन बेल्स, यार्न और गारमेंट का **25** से **30** प्रतिशत एक्पोर्ट होना चाहिए बाकि घरेलू डिमांड भी बढ़ना जरूरी है।

- सभी कॉटन प्रमुख राज्यों की सरकारी नीतिया व्यापार को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए। फाइनेंस प्रक्रिया भी आसान होनी चाहिए।

फर्श से अर्श तक का सफर

शत्रुघ्नजी ने बताया कि लोगों का मानना है कि कॉटन इंडस्ट्री में व्यापार शुरू करने के लिए या तो आपका बैकग्राउंड कॉटन का होना चाहिए या निवेश करने के लिए अच्छा पैसा होना चाहिए। लेकिन मेरे पास यह दोनों ही नहीं थे। **33** साल पहले मैं वर्धमान टेक्सटाइल में सेल और परचेज डिपार्टमेंट में काम करता था। वहां काम के लगभग सभी आयाम समझने के बहुत मौके मिले। सीखने की ललक थी इसलिए किसी मौके को गवांया नहीं। काम के दौरान इंडस्ट्री में कई लोगों से बहुत अच्छे व्यापारिक संबंध भी बने। साल **2000** में जब अपना बिजनेस स्टार्ट किया तो लोगों का बहुत सहयोग और प्यार मिला। उसी के बल में यहां तक पहुंच पाया हूं। मैंने फरवरी में शिवा ओवरसीज शुरू की थी और जून में अपना बैंक अकाउंट खोलने जितना पैसा इकट्ठा कर पाया था। उस वक्त **5** हजार रूपए कमाने के लिए भी बहुत संघर्ष किए और आज कंपनी का सालाना टर्नओवर **400** करोड़ का है।

Arrival Report

कपास मंडियों में लौटी रौनक, बढ़ने लगी है आवक

COTTON ARRIVAL MONTH WISE

SMART INFO SERVICES
CALL : 91119 77771 - 5
Email : india.smartinfo@gmail.com

STATE	2022-2023						
	SEPTEMBER	OCTOBER	NOVEMBER	DECEMBER	JANUARY	FEBRUARY	TOTAL
Punjab	11,363	21,884	36,277	34,900	22,700	21,600	148,724
Haryana	109,096	131,931	145,783	131,500	65,000	71,300	654,610
Upper Rajasthan	50,410	267,138	314,082	228,500	189,500	194,000	1,243,630
Lower Rajasthan	41,460	238,787	216,483	105,100	76,000	88,000	765,830
Total North Zone	**212,329**	**659,740**	**712,625**	**500,000**	**353,200**	**374,900**	**2,812,794**
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77771 - 5							
Gujarat	44,250	290,000	966,000	1,001,000	1,125,000	917,400	4,343,650
Maharashtra	12,600	86,400	353,000	485,000	717,000	1,119,000	2,773,000
Madhya Pradesh	25,800	70,000	244,000	213,000	299,500	280,000	1,132,300
Total Central Zone	**82,650**	**446,400**	**1,563,000**	**1,699,000**	**2,141,500**	**2,316,400**	**8,248,950**
Telangana	2,100	38,400	202,000	248,000	292,000	551,000	1,333,500
Andhra Pradesh	48,600	78,300	150,500	188,000	203,000	160,000	828,400
Karnataka	42,400	82,500	259,000	208,500	145,000	210,000	947,400
Tamil Nadu	40,200	30,500	29,200	20,800	20,000	24,200	164,900
Total South Zone	**133,300**	**229,700**	**640,700**	**665,300**	**660,000**	**945,200**	**3,274,200**
Orissa	-	-	13,000	42,500	67,000	37,100	159,600
Others	-	-	5,000	10,000	15,000	30,000	60,000
TOTAL ARRIVAL	**428,279**	**1,335,840**	**2,934,325**	**2,916,800**	**3,236,700**	**3,703,600**	**14,555,544**
NOTE : ARRIVAL FIGURES ARE TENTATIVE MAY BE POSIBLE 5/10 % PLUS MINUS							

बीते कुछ महीनों के मुकाबले फरवरी माह में कपास आवक में आई तेजी

गर्मी की शुरूआत होते ही किसानों ने रोका हुआ कपास बेचने का मन बना लिया है। इसी का नतीजा है कि फरवरी महीने में कपास की आवक में खासी तेजी देखी गई हैं। नार्थ झोन में बीते माह में कुल **3,74,900** बेल्स ने दस्तक दी। जबकि सेंट्रल झोन में अक्टूबर के बाद दूसरी सबसे बड़ी आवक फरवरी में **23,16,400** बेल्स दर्ज की गई है। वहीं साउथ झोन में भी आवक के दृष्टिकोण से फरवरी माह बेहतर रहा। इस महीने में कुल **9,65,200** बेल्स साउथ झोन की मंडियों में आई। उड़िसा और अन्य राज्यों को मिलाकर फरवरी में देश में कुल कपास आवक **37,03,600** बेल्स दर्ज की गई है।

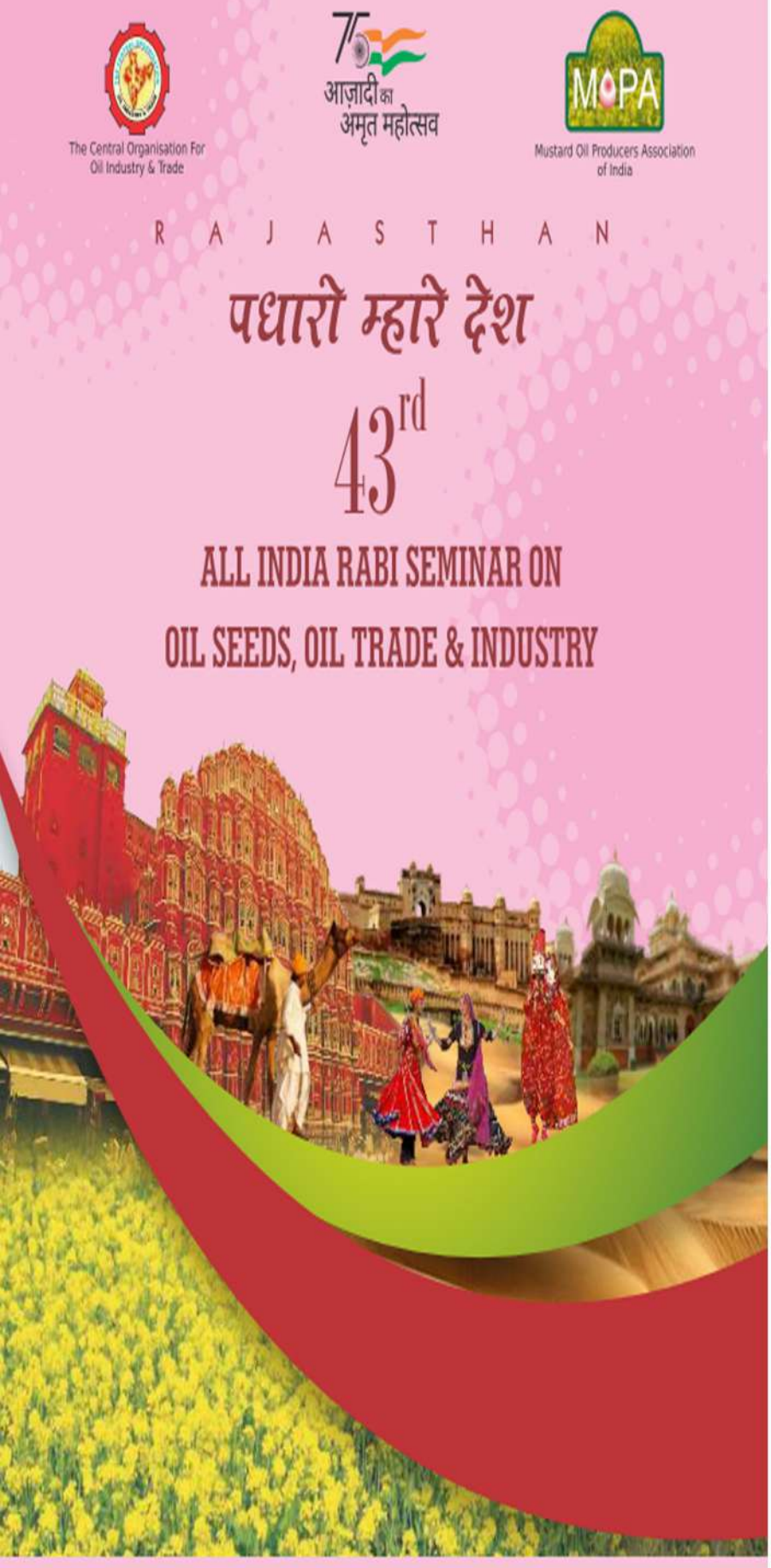

UPCOMING TRADE FAIR

National

IND-TEXPO 2023

ADD - Leela Ambience Convention Hotel, New Delhi, India.
DATE - 22nd March, 2023 to 24th March, 2023
(Technical Textiles)

YARN INDIA EXPO 2023

ADD - Ran Banka Resort, Bhilwara, India.
DATE - 28th April, 2023 to 30th April, 2023
(Yarn & Fibers, Fabrics)

HOMETEX TECH EXPO 2023

ADD - Anaaj Mandi Panipat, Panipat, India.
DATE - 10th March, 2023 to 12th March, 2023
(Home Textile, Fibers)

INDIA CARPET EXPO 2023

ADD - New Delhi, India.
DATE - 19th March, 2023
(yarns, Fibres)

FASHION AND LIFESTYLE EXIBITION 2023

ADD - Hotel Vivanta By Taj, Lucknow, India
DATE - 1st April, 2023 to 2nd April, 2023.
(Textiles, Fashion & Fabrics)

Weed management in organic cropping systems

Handling weeds has been a major problem since ever in the history of agriculture. Farmers struggle a lot to deal with this significant issue as weeds competes with the main crop for water, soil nutrients and sunlight whereas serving as a host for pests and diseases. With the invention of herbicides that involves the use of chemicals, farmers have become able to eradicate weeds and unwanted herbs up to some extent.

In organic farming systems, the approach to remove and prevent weeds eradicates the indulgence of synthetic chemicals and weed destructors. The organic methods for weed control can be cultural or mechanical. And as the use of synthetic chemicals is prohibited, farmers control the weed growth by weed population shift. Soil management, crop rotation, machinery, weather, time and labour are crucial part of the same.

SWATI AGRAWAL
(Blogger)

WEED CONTROL METHODS IN ORGANIC FARMING

Cultural methods

Some of the most substantial methods under this are crop rotation, increasing the competitive crop ability, inclusion of green manure and cover crops, and intercropping. Also, the ability of the crops are increased to compete against the weeds by selecting the right crops and cultivar, considering the weeds present, climatic conditions, ensuring rapid and uniform crop emergence through proper seedbed preparation and increasing planting density.

Physical methods

The physical weed management processes include hand hoeing, weeding, digging, mowing, dredging, cutting, mulching and chaining. One or more of these methods can be employed after knowing the type of weeds and crop situation.

Thermal methods

Some of the thermal weed management processes are direct flaming, hot water, steam, microwave, ultraviolet radiation, electrocution and freezing. Weeds can be destroyed when exposed to very low temperature levels for example, exposing aquatic weeds to low-air temperature levels by removing water from a pond or freezing terrestrial weeds using dry ice.

Mechanical methods

This is the oldest form of weed management that includes tillage, cutting and pulling of weeds. At the early stages, harrowing and brush weeding can be employed. However, if the weed population have grown too large, intense and aggressive implementation of the approaches is to be carried out, which consequently

NEWS HIGHLIGHTS (FEBRUARY' 2023)

- MCX पर दोबारा शुरू हुआ कॉटन वायदा बाजार, कुछ संशोधन के साथ 13 फरवरी 2023 से कॉटन वायदा की नई शुरूआत।
- बजट 2023-24 में ईएलएस कपास के लिए लाभ की घोषणा, पंजाब-हरियाणा और राजस्थान के कपास किसानों को नहीं मिलेगा घोषणा का कोई लाभ।
- गुजरात में कपास के आयात पर 10% बेसिक कस्टम ड्यूटी (बीसीडी) में कोई बदलाव नहीं होने से ग्राहकों को नहीं मिलेगी कोई राहत।
- बेहतर कीमतों की प्रतीक्षा में, कुछ भारतीय किसान घर की छतों पर कर रहे कपास का भंडारण।
- भारत का वार्षिक कपड़ा, परिधान, निर्यात 41 फीसदी बढ़कर हुआ 44.4 बिलियन डॉलर।
- आईसीएएल द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के मुताबिक सीजन 2022-23 में नार्थ झोन में कपास की आवक 10 लाख गांठ कम।
- कॉटन इम्पोर्ट और एक्स्पोर्ट में नंबर 1 बनी वर्धमान टेक्सटाइल, जनवरी महीने के कॉटन इम्पोर्ट की टॉप कंपनीज की लिस्ट में अव्व्ल।
- लंबे समय बाद तिरूपुर को दोबारा मिले वैश्विक ब्रांड्स के ऑर्डर, निर्यात में 11.6 फीसदी का इजाफा।
- केंद्र सरकार ने कॉटन बेल्स के लिए क्वालिटी कंट्रोल ऑर्डर किया अनिवार्य, भारतीय कपास फाइबर की गुणवत्ता किसानों और उद्योग के लिए फायदेमंद होगा यह कदम।
- तुर्की भूकंप से प्रभावित होगा भारतीय उद्योग का निर्यात, कपास, मानव निर्मित धागे और कपड़ा रंगों जैसी वस्तुओं के भारत के व्यापारिक निर्यात पर अल्पावधि में पड़ सकता है प्रभाव ।
- ऑस्ट्रेलिया के कपास व्यापारियों को चीन से संबंध सुधरने और प्रतिबंध हटाने की उम्मीद ।

MEET OUR TEAM

RAKSHA BHAGAT JAIN

[MANAGING EDITOR AND MEDIA HEAD]

Raksha Bhagat Jain posseses more than 10 years of experience in Journalism. As a journalist, she has led diversified projects for companies in terms of interviews and articles of the renowned dignitaries of the fraternity and provide fair and unbiased news and information on varied platforms.

THE EDITOR OF COT COSMOS

SHLESHA LAHOTI

[GRAPHIC DESIGNER & CREATIVE HEAD]

Shlesha Lahoti, Graphic Designer by proffesion, serves as a Creative Head of the company. She has been delivering all the creative assignments that has been doing commendable work in terms of creativity and innovation.

THE DESIGNER OF COT COSMOS

ROHIT DHAKORIA

[BUSINESS DEVELOPMENT EXECUTIVE / COTTON ANALYST]

Rohit Dhakoriya is one of the employees who have been building blocks of the company. He has become an expert in even the minute specifics of cotton over the years. He strives to deliver quality insights of the cotton market both timely and precisely.

THE DATA ANALYST OF COT COSMOS

SIS CONNECT

For daily Market updates and all your textiles related issues **DOWNLOAD** our app now!!

INSTALL NOW

(Register now for free trial)

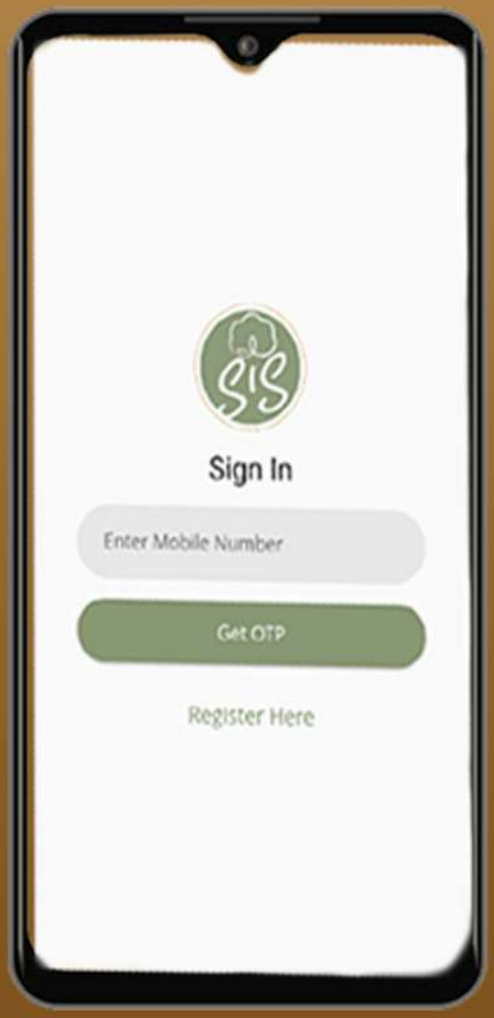

RAKSHA BHAGAT JAIN (EDITOR) / CONTACT - +91 - 74150 28064